वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा के स्नातक पार्ट-II अर्थशास्त्र विभाग के तृतीय पत्र के पाठ्यक्रम के अनुसार भारत में बेरोजगारी पर प्रकाश डाला जा रहा है।

Question:- What is Unemployment in India? Write the Causes of educated unemployment and Suggest Measure to slove it.

भारत में बेरोजगारी का अर्थ, कारण व सुझाव दीजिए।

बेरोजगारी की समस्या से अर्थ
(Meaning of Unemployment)

सामान्यतः जब एक व्यक्ति को अपने जीवन निर्वाह के लिए कोई कार्य नहीं मिलता है तो उस व्यक्ति को बेरोजगार और इस समस्या को बेरोजगारी समस्या कहते हैं। दूसरे शब्दों में जब कोई व्यक्ति कार्य करने का इच्छुक है और वह शारीरिक रूप से कार्य करने में समर्थ भी है, लेकिन उसको कोई कार्य नहीं मिलता जिससे कि वह जीविका कमा सके तो इस प्रकार की समस्या बेरोजगारी की समस्या कहलाती है।

भारत में बेरोजगारी का स्वभाव एवं प्रकार
(Nature and types of unemployement in India)

भारत में बेरोजगारी विभिन्न स्वभाव एवं प्रकार की है जिसको निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है:-

1) संरचनात्मक बेरोजगारी (Structural Unemployment) - भारत में बेरोजगारी इसी स्वभाव की है। जब देश में पूँजी के साधन सीमित होते है और काम चाहने वालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है तो कुछ व्यक्ति बिना काम के ही रह जाते है क्योंकि उनके लिए पर्याप्त पूँजी-साधन नहीं होते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी विकासशील देशों में पायी जाती है तथा यह दीर्घकालीन होती है। भारत में बेरोजगारी का स्वभाव इसी प्रकार का है। यहाँ इस बेरोजगारी की समस्या ने कई रूप ले लिये हैं जैसे प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment), ~~अल्प~~ अल्प-रोजगार (Under-Employment), खुली बेरोजगारी (Open-Unemployment), मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment) व शिक्षित बेरोजगारी (Educated Unemployment)। इस सभी का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है:

2) प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) - बेरोजगारी का यह स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखायी नहीं देता है। यह छिपा रहता है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी कृषि में पायी जाती है जिसमें आवश्यकता से अधिक व्यक्ति लगे हुए हैं। यदि इनमें से कुछ व्यक्तियों को खेती के कार्य से अलग कर दिया जाता है तो उत्पादन में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। इसका अर्थ यह है कि इस प्रकार के अधिक व्यक्तियों द्वारा उत्पादन में कोई योगदान नहीं दिया जाता है। ऐसे व्यक्ति प्रच्छन्न बेरोजगारी के अन्तर्गत आते हैं।

3) अल्प-रोजगार (Under-Employment) - जब किसी व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं मिलता है तो इसे

अल्प-रोजगार ~~कर कहते~~ कहते हैं। ऐसी स्थिति में एक व्यक्ति द्वारा जितना योगदान उत्पादन में दिया जाना चाहिए वह उससे कम ही योगदान देता है। इसको और अधिक इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। जब एक इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त व्यक्ति लिपिक या श्रमिक के रूप में कार्य करता है तो इसको अल्प-रोजगार कहते हैं। ऐसा व्यक्ति कार्य करता तो दिखायी देता है लेकिन उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं होता है।

4) खुली बेरोजगारी (Open Unemployment) - "जब व्यक्ति कार्य करने के योग्य है और वे कार्य करना चाहते हैं लेकिन उनको कार्य नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति को खुली बेरोजगारी कहते हैं।" भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी व्याप्त है। यहाँ लाखों व्यक्ति ऐसे हैं जो शिक्षित है, तकनीकी योग्यता प्राप्त है लेकिन उनको काम करने का अवसर नहीं मिल रहा है।

5) मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment) - इस प्रकार की बेरोजगारी वर्ष के कुछ समय में हो जाती है। भारत में यह कृषि में पायी जाती है। जब खेतों की जुताई एवं बुआई का मौसम होता है तो कृषि उद्योग में दिन-रात काम होता है। इसी प्रकार जब कटाई का समय होता है तो फिर कृषि में काम होता है। लेकिन बीच के समय में इतना काम नहीं होता है अतः इस प्रकार के समय में श्रमिकों को काम नहीं मिलता है। इस बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

6) शिक्षित बेरोजगारी (Educated Unemployment) - यह खुली बेरोजगारी का ही एक रूप है। इसमें शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार होते हैं। शिक्षित बेरोजगारी में कुछ व्यक्ति अल्प-रोजगार की स्थिति में होते हैं जिन्हें रोजगार मिला हुआ होता है लेकिन वह उनकी शिक्षा के अनुरूप नहीं होता है भारत मे इस प्रकार की बेरोजगारी भी पायी जाती है।

भारत में बेरोजगारी का अनुमान
(Estimate of Unemployment in India)

भारत में बेकारी की स्थिति का सही-सही अनुमान लगाना सम्भव नहीं है, क्योंकि विश्वसनीय आँकड़ों का अभाव है। फिर भी अधिकारिक आंकड़ों में ये बात सामने आई है कि भारत में बेरोजगारी की दर 2017-2018 में 45 साल के ~~उच्च~~ उच्च स्तर 6.10 प्रतिशत पर पहुच गई।

भारत में बेरोजगारी के कारण
(CAUSES OF UNEMPLOYMENT IN INDIA)

(1) **तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या** (Rapidly Increasing Population)—बेरोजगारी में तीव्र गति से वृद्धि का मुख्य एवं महत्वपूर्ण कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है जो 2·5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है जबकि रोजगार की सुविधाएँ उस दर से नहीं बढ़ रही हैं। यहाँ प्रतिवर्ष 70 लाख व्यक्ति रोजगार चाहने वालों की संख्या में जुड़ जाते हैं।

(2) **दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली**—देश में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने का मुख्य कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। यहाँ शिक्षा सिद्धान्त-प्रधान शिक्षा है जबकि इसका व्यवसाय-प्रधान (Job-Oriented) होना चाहिए। यहाँ दिसम्बर 1982 के अन्त में 97·7 लाख शिक्षित बेरोजगार थे जो हाईस्कूल या इससे अधिक शिक्षा प्राप्त किये हुए थे। हमारी शिक्षा व्यावहारिक कार्य करने के योग्य व्यक्तियों का निर्माण करने में सहायक नहीं है।

(3) **हस्तकला एवं लघु उद्योगों की अवनति** (Downfall of Handicrafts & Small Industries)—बेरोजगारी बढ़ाने में हस्तकला एवं लघु उद्योगों की अवनति ने भी काफी योगदान दिया है। इन उद्योगों की अवनति का मुख्य कारण मशीनों के प्रयोग में वृद्धि का होना है। इससे इन उद्योगों के श्रमिकों को भी अन्य कार्य देखने के लिए विवश होना पड़ा है जिससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।

(4) **त्रुटिपूर्ण अर्थ नियोजन** (Defective Planning)—देश में 1951 से नियोजन का कार्य चल रहा है लेकिन यह नियोजन त्रुटिपूर्ण रहा है। इनमें रोजगारमूलक नीति का प्रतिपादन नहीं किया गया है। अतः विद्वानों का मत है कि इस कारण से बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।

(5) **पूँजी निर्माण की गति का मन्द होना** (Slow Rate of Capital Formation)—इस देश में पूँजी निर्माण की गति बहुत ही धीमी एवं निम्न रही है जिसके कारण उद्योगों, व्यवसायों व सेवाओं का विस्तार भी धीमी गति से ही हुआ है जबकि जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ने के कारण रोजगार सुविधाएँ उस दर से नहीं बढ़ पायी हैं।

(6) **यन्त्रीकरण एवं अभिनवीकरण** (Mechanisation & Rationalisation)—भारतवर्ष विकासशील देश होने के कारण यन्त्रीकरण एवं अभिनवीकरण की ओर बढ़ रहा है। देश में स्वचालित मशीनें लगायी जा रही हैं। कृषि में यन्त्रीकरण की गति बराबर बढ़ रही है। इन सभी का परिणाम यह हुआ है कि अब पहले की तुलना में कम व्यक्तियों से वही कार्य कराया जा सकता है।

(7) **स्त्रियों द्वारा नौकरी** (Service by Women)—स्वतन्त्रता से पूर्व बहुत थोड़ी-सी स्त्रियाँ ही नौकरी करती थीं लेकिन आज इनकी संख्या एवं इनका प्रतिशत पहले से कहीं अधिक है। इससे पुरुषों में बेरोजगारी बढ़ी है।

(8) **विदेशों से भारतीयों का आगमन** (Arrival of Indians from Abroad)—पिछले कुछ वर्षों से भारत मूल के निवासियों को कुछ देशों द्वारा निकाला जा रहा है। इन देशों में ब्रिटेन, लंका, यूगेण्डा, कीनिया आदि प्रमुख हैं। इन देशों से भारतीयों के आने के कारण भी बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।

(9) **दोषपूर्ण दृष्टिकोण** (Defective Outlook)—इस देश में बेरोजगारी का एक महत्वपूर्ण कारण शिक्षित व्यक्तियों द्वारा नौकरी चाहने की इच्छा है। वे स्वयं कोई उत्पादित कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहते हैं। इनमें इस दोषपूर्ण विचार के कारण भी बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।

(10) **मजदूरी व उत्पादकता में अन्तर** (Difference between Wages and Productivity)—देश में नियोजन होने के कारण मुद्रा प्रसार बना हुआ है जिससे मूल्य वृद्धि होती रहती है। इससे प्रभावित होकर श्रमिकों की माँग पर श्रमिकों के वेतन व भत्ते बढ़ा दिये जाते हैं जिससे वस्तुओं की लागत और मूल्य बढ़ जाते हैं लेकिन वस्तुओं की माँग कम हो जाती है। इससे उत्पादन कम करने के कारण बेरोजगारी में वृद्धि हो जाती है।

बेरोजगारी दूर करने के उपाय
(SUGGESTIONS FOR REMOVING UNEMPLOYMENT)

बेरोजगारी दूर करने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं :

(1) **जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण** (Control on Population Growth)—बेरोजगारी दूर करने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर उचित नियन्त्रण लगाया जाना चाहिए। भारत में वर्तमान जनसंख्या वृद्धि दर 2·5 प्रतिशत वार्षिक है। 2000 तक 1·2 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है। इस कम वृद्धि दर के आधार पर भारत की जनसंख्या 2000 तक 87 करोड़ हो जायेगी।

(2) **शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन** (Change in Education System)—वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया जाना चाहिए। इसको रोजगार उन्मुख (employment oriented) बनाया जाना चाहिए जिसके लिए व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार किया जाना चाहिए। शिक्षा

को बिना व्यावसायिक एवं रोजगार उन्मुख बनाये शिक्षित बेरोजगारी में कमी नहीं की जा सकती है।

(3) **कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास** (Development of Cottage & Small-scale Industries)—बेरोजगारी दूर करने के लिए सुझाव दिया जाता है कि कुटीर एवं लघु उद्योगों को स्थापित किया जाय जिससे कि कम पूँजी विनियोग पर अधिक व्यक्तियों को रोजगार मिल सके। इसके लिए ऐसे लघु उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए जो श्रम-प्रधान हों।

(4) **प्राकृतिक साधनों का सर्वेक्षण** (Survey of Natural Resources)—सरकार को प्राकृतिक साधनों का विस्तृत सर्वेक्षण करके उन सम्भावनाओं का पता लगाना चाहिए जिनसे नये-नये उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। यह कहा जाता है कि भारत में प्राकृतिक साधन पर्याप्त मात्रा में हैं इसीलिए इसको सोने की चिड़िया का नाम दिया गया है।

(5) **कृषि-सहायक उद्योग-धन्धों का विकास** (Development of Agriculture-based Industries)—भारत में कृषि में प्रच्छन्न बेरोजगारी एवं मौसमी बेरोजगारी पायी जाती है। अतः यह सुझाव दिया जाता है कि गाँवों में कृषि में सहायक उद्योग-धन्धों का विकास किया जाना चाहिए जिससे कि कृषक खाली समय में भी कुछ कार्य कर सकें। इसके लिए पशुपालन, मुर्गीपालन, बागवानी, दुग्ध व्यवसाय, मत्स्य-पालन आदि, जैसे धन्धों का विकास किया जा सकता है।

(6) **गाँवों में रोजगार उन्मुख नियोजन** (Employment Oriented Planning in Villages)—गाँवों में रोजगार मिलने की काफी सम्भावनाएँ हैं जैसे गाँवों में डॉक्टरों, कम्पाउण्डरों, मिस्त्रियों, अध्यापकों, छोटे उद्योगपतियों, आदि की कमी है। अतः गाँवों के लिए ऐसी रोजगार उन्मुख योजनाएँ बनायी जायँ कि इस प्रकार के व्यक्तियों को वहाँ रोजगार मिल सके। भारत में गाँव व शहरों को मिलाने वाली सड़कें पक्की नहीं हैं अतः इनको पक्का कराने का कार्य प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

(7) **वृहत उद्योगों की पूर्ण औद्योगिक क्षमता का उपयोग** (Use of Full Capacity of Large-scale Industries)—भारत में बहुत-से उद्योग अपनी क्षमता से कम क्षमता पर कार्य कर रहे हैं। अतः इस प्रकार के उद्योगों को अपनी पूरी क्षमता पर कार्य करने के लिए कहना चाहिए जिससे कि इन वृहत उद्योगों में रोजगार अवसरों में वृद्धि की जा सके।

(8) **जनशक्ति नियोजन** (Man-Power Planning)—देश में जनशक्ति नियोजन किया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि विभिन्न उत्पादन क्षेत्रों में श्रम की माँग एवं पूर्ति के बीच समायोजन किया जाना चाहिए। समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए श्रमिकों की भावी माँग व उसकी पूर्ति के बारे में पहले से पता लगा लिया जाना चाहिए तथा उसी के अनुसार प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(9) **विनियोग दर में वृद्धि** (Increase in Investment Rate)—रोजगार सुविधाओं को बढ़ाने के लिए घरेलू बचतों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिससे कि पूँजी निर्माण ऊँची दर से किया जा सके और विनियोग दर में वृद्धि की जा सके। इससे नये-नये उद्योगों की स्थापना में सहायता मिलेगी और रोजगार सुविधाओं में वृद्धि होगी।

(10) **गाँवों में बिजलीघरों की स्थापना** (Establishment of Power Houses in Villages)—ग्रामीण बेरोजगारी को दूर करने के लिए भगवती समिति ने यह सुझाव दिया है कि गाँवों में बिजलीघरों की स्थापना की जाय जिससे कि वहाँ छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे पनप सकें।

(11) **रोजगार मन्त्रालय की स्थापना** (Establishment of Employment Ministry)—श्रम मन्त्रालय द्वारा गठित पी० सी० मथ्यू समिति ने तकनीकी शिक्षा, प्रशिक्षण एवं नौकरी तथा जनशक्ति के लिए नियोजन के लिए एक अलग मन्त्रालय के गठन की सिफारिश की है।

(12) **अन्य सुझाव** (Other Suggestions)—बेरोजगारी कम करने के लिए (i) सड़क निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जाय, (ii) ग्रामीण मकान बनाने के लिए सुविधाएँ दी जायँ, (iii) छोटी सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाय; (iv) कृषि सेवा केन्द्र (Agro-service Centres) स्थापित किये जायँ ताकि तकनीकी व्यक्तियों को गाँवों में ही रोजगार मिल सके।

राष्ट्रीय श्रम आयोग ने देश में बेकारी एवं अर्द्ध-बेकारी की समस्या के निवारण हेतु कई उपयोगी सुझाव दिये; जैसे—(i) रोजगार की राष्ट्रीय नीति पूर्व निश्चित करना, (ii) अखिल भारतीय मानव शक्ति सेवा का निर्माण करना, (iii) शिक्षा पद्धति में परिवर्तन, (iv) औद्योगिक विकास में तेजी, (v) राष्ट्र के मानवीय साधनों का सर्वेक्षण करना, (vi) नौकरी सलाहकार सेवाओं को मजबूत करना, तथा (vii) प्रत्येक सामुदायिक विकास खण्ड में कम से कम एक रोजगार दफ्तर रखना।

संदर्भ सूची :-

1) भारतीय अर्थशास्त्र, जैन एवं मेमोरिया
2) भारतीय अर्थशास्त्र, डा० सुमन

प्रो (डा०) वीरेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग
डी. के कालेज डुमराँव, बक्सर
मोबाइल नं०:- 9430006733
ई-मेल :- dksinghvksu@gmail.com